ग्राफ़िक डिज़ाइन एक कहानी

कक्षा 11 के लिए पाठ्यपुस्तक

ग्राफ़िक डिज़ाइन एक कहानी
© NCERT
not to be republished

विद्ययाऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

अप्रैल 2011 चैत्र 1933

PD 2T NSY

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2011

₹ 170.00

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा श्री वृंदावन ग्राफिक, ई-34, सैक्टर-7, नोएडा 201301 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-93-5007-148-9

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 **फोन : 011-26562708**

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	:	*नीरजा शुक्ला*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*शिव कुमार*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*गौतम गांगुली*
संपादक	:	*नरेश यादव*
उत्पादन सहायक	:	*प्रकाश वीर सिंह*

आवरण

ललित मोर्य

© NCERT not to be republished

प्राक्कथन

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.)–2005 में यह सिफ़ारिश की गई है कि बच्चों का स्कूली जीवन उनके स्कूल से बाहर के जीवन से जुड़ा होना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत से हटकर है जो आज भी हमारी प्रणाली को रूप प्रदान कर रही है और स्कूल, घर और समुदाय के बीच अंतर बनाए हुए है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के आधार पर विकसित पाठ्य विवरणों एवं पाठ्यपुस्तकों में इस विचार को कार्यान्वित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। साथ ही इनके माध्यम से रटन-विद्या की प्रणाली को निरुत्साहित किया और विभिन्न विषयों के बीच की सीमाओं को मिटाने का प्रयत्न किया जा रहा है। हमें आशा है कि इन उपायों द्वारा हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 में उल्लिखित बाल-केंद्रित शिक्षा प्रणाली की दिशा में काफी आगे बढ़ सकेंगे।

एन.सी.एफ. की एक प्रमुख सिफारिश यह थी कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर उपलब्ध वैकल्पिक विषयों की संख्या बढ़ाई जाए। इस सिफारिश के अनुसरण में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) ने सृजनशीलता तथा अंतरविषयक समझ को प्रोत्साहन करने की क्षमता बढ़ाने के लिए एन.सी.एफ. में दर्शाए गए कुछ नए विषय-क्षेत्रों को पाठ्यचर्या में शामिल करने का निर्णय लिया है। तदनुसार इस पाठ्यपुस्तक में ग्राफिक डिज़ाइन के विशिष्ट अध्ययन की एक नई शिक्षण-पद्धति प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। यह पद्धति आधारभूत ज्ञान को व्यावहारिक अनुभव के साथ समन्वित करती है।

इस प्रयास को तभी सफलता मिल सकती है जब स्कूलों के प्रधानाचार्य, बच्चों के माता-पिता, अभिभावक और अध्यापक यह समझें कि यदि बच्चों को अवसर, समय, स्थान और स्वतंत्रता दी जाए तो वे बड़ों से प्राप्त जानकारी का उपयोग करते हुए नया ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। निर्धारित पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एक मात्र आधार मानना एक ऐसा प्रमुख कारण है जिसकी वजह से अध्ययन के अन्य स्थलों तथा संसाधनों की उपेक्षा की जाती है। सृजनशीलता तथा पहल-शक्ति तभी उत्पन्न हो सकती है जब हम बच्चों को एक निश्चित ज्ञान-पुंज के ग्रहीता न समझकर, अध्ययन में सहभागी बनाएँ।

इन लक्ष्यों का तात्पर्य यह है कि स्कूलों के सभी कार्यों और काम करने के तरीकों में पर्याप्त परिवर्तन लाया जाए। दैनिक समय-सारिणी में लचीलापन होना भी उतना ही आवश्यक है जितना कि वार्षिक कार्यसूची (कैलेण्डर) के कार्यान्वयन में कठोरता लाना, जिससे कि अध्यापन के लिए निर्धारित सभी दिन वास्तव में पढ़ाई में ही लगाए जाएँ और किसी कार्य में नहीं। अध्यापन और मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त विधियाँ भी यह निर्धारित करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक, तनाव या नीरसता का साधन न बनकर, बच्चों के स्कूली जीवन को सुखद अनुभव बनाने में कितनी सफल हुई है। पाठ्य विवरण के निर्माताओं ने पाठ्यचर्या के बोझ की समस्या का हल करने का भी प्रयास किया है, और इसके लिए, बाल-मनोविज्ञान तथा अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का अधिक ध्यान रखते हुए, भिन्न-भिन्न स्तरों पर जानकारी के रूप एवं संरचना में यथोचित परिवर्तन किया है। इसी उद्देश्य से पाठ्यपुस्तक में चिंतन-मनन और छोटे समूहों में चर्चा, एवं व्यावहारिक अनुभव कराने वाले क्रियाकलापों के लिए उपयुक्त अवसरों को उच्च प्राथमिकता तथा स्थान देने का प्रयत्न किया गया है।

© NCERT not to be republished

एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्य विवरण तथा पाठ्यपुस्तक विकास समिति द्वारा किए गए परिश्रम के लिए उनकी प्रशंसा करती है। इस अंतर सक्रिय पाठ्यपुस्तक को तैयार करने का काम निश्चित रूप से चुनौतीपूर्ण था और इस परियोजन के मुख्य सलाहकार श्री कृष्ण आहूजा ने जो कष्ट साध्य प्रयत्न किए हैं वे अवश्य ही प्रशंसनीय हैं। हम उन सभी संस्थानों तथा संगठनों के आभारी हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्रियों तथा कार्मिकों की सेवाओं का उपयोग करने की अनुमति दी है। हम विशेष रूप से प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी और प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित उस राष्ट्रीय निगरानी समिति के सदस्यों के लिए कृतज्ञ हैं जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यमिक और उच्च शिक्षा विभाग द्वारा नियुक्त की गई थी। अपने उत्पादों की गुणवत्ता में निरंतर वृद्धि करने और प्रणालीगत सुधार लाने के लिए प्रतिबद्ध संगठन के रूप में, एन.सी.ई.आर.टी. इस कृति के विषय में प्राप्त होने वाली ऐसी सभी टीका-टिप्पणियों एवं सुझावों का सदा स्वागत करेगी जिनके आधार पर आगामी संस्करणों में संशोधन-परिवर्द्धन किए जा सकें।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
दिसंबर 2008

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.)–2005 में ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर वैकल्पिक विषयों की विविधता पर...'' बल दिया गया है। इस आवश्यकता को देखते हुए, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) की सहमति से यह निर्णय लिया है कि कक्षा 11 और 12 में, 'ग्राफिक डिज़ाइन' विषय को एक वैकल्पिक विषय के रूप में शुरू किया जाए जिसे अन्य विषयों के साथ का दर्जा दिया जाए। तदनुसार, एन.सी.ई.आर.टी. ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए ग्राफिक डिज़ाइन के पाठ्यक्रम का विकास किया है। यह पाठ्यक्रम उन छात्र-छात्राओं को उपलब्ध कराया जाएगा जिन्होंने कक्षा 10 या उसके समकक्ष कोई अन्य परीक्षा कला/रेखाचित्रण (ड्राइंग)/चित्रकला विषय के साथ या बिना इन विषयों के उत्तीण की हो।

अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में हम तरह-तरह की जानकारियों; जैसे-शब्दों, शुभंकरों, संकेतों, प्रतीकों, दृश्य आकृतियों, पाठ्य संदेशों आदि से घिरे रहते हैं। उदाहरण के लिए, बस में यात्रा करते समय हम सड़क, यातायात और यातायत संबंधी संकेत देखते हैं। इनमें से कुछ जानकारी तो महत्वपूर्ण होती है या नहीं भी होती अथवा कुछ हमारे लिए उपयोगी होती है, कुछ नहीं भी होती। हमारी आँखें और मन बहुत चयनात्मक होते हैं और अपने चारों ओर ऐसी ही जानकारी देखना या ढूँढ़ना चाहते हैं जो उपयोगी या सार्थक होती है और ध्यान को उस जानकारी की ओर ले जाती है जो आकर्षक और रोचक रूप में प्रस्तुत की गई हो।

कक्षा 11 के लिए 'ग्राफिक डिज़ाइन' विषय की यह पुस्तक दृश्य जागरूकता और ग्राफिक संवेदनशीलता के बारे में है। वैसे तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी जागरूकता का प्रयोग कुछ सीमा तक अवश्य करता है, मगर ग्राफिक डिज़ाइनर इस सीमा से आगे तक जाता है, और उसे अपने चारों ओर उपलब्ध जानकारी को यथासंभव सर्वोत्तम रीति से रूपांकित करने में अपेक्षाकृत अधिक गहराई तक निरीक्षण करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है। इस पुस्तक का उद्देश्य केवल यह बताना ही नहीं है कि 'डिज़ाइन कैसे करें' बल्कि यह ग्राफिक कला, डिज़ाइन और ग्राफिक डिज़ाइन के विकास और उसके दर्शन को भी समझाती है।

चूँकि प्रत्येक छात्र की अपनी विशेषता होती है और उसकी ज़रूरतें भी अलग-अलग तरह की होती हैं, इसलिए ग्राफिक डिज़ाइन के विषय को अन्य विषयों की तरह नहीं पढ़ाया जा सकता। ग्राफिक डिज़ाइन की शिक्षा 'क्रियामूलक अधिगम' यानी 'कर-कर के सीखने' की रीति से दी जाती है। छात्र अपना संपूर्ण पाठ्यक्रम पूरा करता है जिसमें अभ्यासमालाएँ, प्रायोगिक कार्य और परियोजनाएँ शामिल होती हैं जिन्हें संपन्न करने के बाद छात्र ग्राफिक डिज़ाइन के बारे में अपनी अंतर्दृष्टि विकसित कर लेता है। समय-समय पर अध्यापक अपने छात्र की व्यक्तिगत आवश्यकताओं और उपेक्षाओं को देखते हुए और उन पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देते हुए छात्र के विकास पर बराबर नज़र रखता है। इसी प्रक्रिया में छात्र अपना काम सीखता जाता है और सृजनात्मक एवं मौलिक विचार तथा रचनात्मक संकल्पनाएँ उत्पन्न करने की प्रेरणा प्राप्त करता रहता है। साथ ही वह, उपयुक्त माध्यम और सामग्री के प्रयोग तथा ग्राफिक रूप से अभिव्यक्ति और संचार की दृश्य भाषा सीखता जाता है। कक्षा 11 के पाठ्यक्रम के अंत तक छात्र विभिन्न सैद्धांतिक संकल्पनाएँ समझने के लिए सक्षम हो जाएगा और उसे ग्राफिक डिज़ाइन के माध्यम से अपने विचारों तथा भावों को अभिव्यक्ति

© NCERT not to be republished

और प्रस्तुत करने का पर्याप्त अनुभव प्राप्त हो जाएगा। छात्रों से आशा की जाती है कि वे हर वर्ष अपना पोर्टफोलियो प्रस्तुत करेंगे जिसमें उस वर्ष के दौरान उनके द्वारा तैयार की गई कम-से-कम 20 कृतियाँ संगृहीत होंगी। ये कृतियाँ सामग्री की खोज तथा दृश्य प्रभाव की दृष्टि से संपन्न होनी चाहिए।

ग्राफिक डिज़ाइन में सौंदर्यात्मक संवेदनशीलता, सृजनात्मकता और कुशलता विकसित करने की पर्याप्त क्षमता होती है। विद्यालय स्तर पर इस पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राप्त अनुभव और कुशलताओं के बल पर छात्र शिक्षा के उच्चतर स्तर पर भी यह विषय पढ़ने के लिए प्रेरित होंगे, क्योंकि अधिकांश कला अथवा कला से संबंधित संस्थाएँ कार्य-बल उत्पन्न करने के लिए इस विषय में स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के अवसर प्रदान करती हैं। सौंदर्य शास्त्र किसी कलाकृति को समझने-सराहने की शिक्षा देता है। आज के इस सूचना प्रौद्योगिकी के युग में, यदि तकनीकी ज्ञान का सृजनात्मक चिंतन और निष्पादन के साथ संयोग हो जाए तो यह समझो कि सृजनकर्ताओं और ग्रफिक डिज़ाइनरों के लिए एक स्वर्ण युग का शुभारंभ होने वाला है।

यह पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय स्तर पर उच्च अध्ययन के अवसरों के साथ ही नहीं जुड़ा हुआ है बल्कि यह उन छात्रों को सहायता देने के उद्देश्य से भी तैयार किया गया है जो भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में मुद्रित एवं अमुद्रित माध्यमों के लिए कार्यरत संस्थाओं और संगठनों में रोज़गार के अवसर ढूँढ़ना चाहते हैं। स्कूल छोड़ने के बाद, वे आत्मनिर्भर होने के लिए ग्राफिक डिज़ाइन स्टूडियो में कार्य कर सकते हैं अथवा ग्राफिक डिज़ाइन की मौलिक कृतियों की रचना कर सकते हैं।

परिषद् उन सभी महानुभावों के प्रति आभारी है जिन्होंने इस पुस्तक के विकास में योगादन दिया है। तथापि, इस पुस्तक की उपयोगिता के निर्णायक तो इसके उपयोगकर्ता, मुख्य रूप से छात्र, अध्यापक और अभिभावक ही होंगे। एन.सी.ई.आर.टी. उनकी समीक्षाओं, टीका-टिप्पणियों और आलोचनाओं का सदा स्वागत करेगी और उनके आधार पर भविष्य में उपयुक्त समय आने पर निश्चित रूप से इसका संशोधित संस्करण प्रकाशित करेगी।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

मुख्य सलाहकार

कृष्ण आहूजा, *एसोशिएट प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त), कॉलेज ऑफ़ आर्ट, दिल्ली

सदस्य

अनिल सिन्हा, *वरिष्ठ संकाय सदस्य*, कम्युनिकेशन डिज़ाइन, नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ़ डिज़ाइन, अहमदाबाद

दिनेश पुरी, *पी.जी.टी.*, सी.आर.पी. पब्लिक स्कूल, रोहिणी, नई दिल्ली

विनोद विद्वंस, *प्रोफ़ेसर*, फाउण्डेशन फॉर लिबरल एण्ड मैनेजमेंट एजुकेशन, पुणे

सुजय मुखर्जी, *शिक्षक*, फ्यूचर होप, 1/8, रोलैंड रोड, कोलकाता

सदस्य समन्वयक

सुनील कुमार, *एसोशिएट प्रोफ़ेसर*, डी.ई.ए.ए., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

हिन्दी अनुवाद

अवंतिका त्रिपाठी, *अनुवादक*, नई दिल्ली

अवधेश कुमार सिंह, *निदेशक*, इंस्टीट्यूट ऑफ़ फ़ाइन आर्ट्स, वाराणसी

अनीता गौड़, *शिक्षक*, ललित कला, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

कनुप्रिया तनेजा, *पी.जी.टी.*, ग्राफ़िक डिज़ाइन और हैरिटेज क्राफ्ट, टैगोर पब्लिक स्कूल, शास्त्री नगर, जयपुर

परशुराम शर्मा, *भूतपूर्व निदेशक* (राजभाषा), भारत सरकार

मालती गायकवाड़, *एसोशिएट प्रोफ़ेसर*, फ़ैकल्टी ऑफ़ फ़ाइन आर्ट्स, महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ़ बड़ोदा, वडोदरा

ज्योत्स्ना तिवारी, *एसोशिएट प्रोफ़ेसर*, डी.ई.ए.ए., एन.सी.ई.आर.टी. (*सदस्य समन्वयक*)

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सबमें** व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

© NCERT not to be republished

आभार

ग्राफिक डिज़ाइन : एक कहानी का निर्माण अनेक पेशेवर, शिक्षाविदों, स्कूली शिक्षकों, संपादकों और डिज़ाइनरों के अथाह सहयोग का परिणाम है। इस पुस्तक की प्रत्येक इकाई को विचार-विमर्श के पश्चात् कई महीनों में परिष्कृत किया गया। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् इस प्रक्रिया में भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति की आभारी है। हम पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के सभी सदस्यों के प्रति विशेष रूप से आभारी हैं जिन्होंने पाठ्यपुस्तक के निर्माण में अपनी बहुमूल्य सलाह दी। इनमें प्रोफ़ेसर भूलेश्वर माटे, *प्रो वाइस चांसलर*, असम विश्वविद्यालय, दीफू परिसर, असम; श्री दत्तात्रेय आप्टे, डिज़ाइन व प्रदर्शनी प्रभाग, आई.टी.पी.ओ., नई दिल्ली; श्री जी. विनोद कुमार, दिल्ली पब्लिक स्कूल, आर. के. पुरम्, नई दिल्ली; श्री पुलक दत्त, ग्राफिक आर्ट विभाग, कला भवन, विश्व भारती, शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल और डॉ. राम बाबू पारेख, *लेक्चरर*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर मुख्य हैं।

पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि के पुनरावलोकन में किए गए सहयोग के लिए हम प्रोफ़ेसर एम. विजयमोहन, *प्रधानाचार्य,* कॉलेज ऑफ आर्ट, तिलक मार्ग, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर नागराज पतूरी, फ्लेम, पुणे; अंजन बोस, टैगोर इन्टरनेशनल पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली और आर. एस. अकेला, शासकीय बालक उच्च माध्यमिक विद्यालय, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली के आभारी हैं। पोर्टफोलियो मूल्यांकन पद्धति विकसित करने के लिए हम केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा दिए गए सहयोग के लिए भी आभारी हैं।

पाठ्यपुस्तक में जिन विभिन्न प्रकाशित सामग्रियों से विचार लिए गए हैं वे हैं: *ए हिस्ट्री ऑफ ग्राफिक डिज़ाइन*, फिलिप बी. मेग्स, द्वितीय संस्करण, न्यूयार्क, वैन नॉस्ट्रैन्ड रिनहोल्ड, 1992; द *ऑक्सफोर्ड कम्पेनियन टू आर्ट*, हारोल्ड ऑसबोन, ऑक्सफोर्ड, क्लैरेनडॉन प्रेस, 1970; *इंडियन सिम्बालॉजी* (संपा.), प्रोफ़ेसर कीर्ति त्रिवेदी, आई. डी. सी., इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी, मुंबई, 1987; *इंडियन लैंग्वेज: फान्ट डिज़ाइनिंग एण्ड फॉन्ट टैक्नोलॉजी*, प्रोफ़ेसर आर. के. जोशी, विश्वभारत टीडीआईएल, अप्रैल 2005 जर्नल (सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार का ऑनलाइन जर्नल); *ए हिस्ट्री ऑफ ग्राफिक आर्ट,* जैम्स क्लीवर, पीटर ओवन लिमिटेड, 50 ओल्ड ब्रम्पटन रोड, लंदन एस डब्ल्यू 7, 1963; *भारतीय छापाचित्र कला : आदि से आधुनिक काल तक*, सुनील कुमार, नेशनल बुक ट्रस्ट, एवं भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली, 2000; *इण्डियन आर्ट, ए कन्साइज़ हिस्ट्री,* रॉय सी. क्रॅवन, थेम्स एण्ड हडसन लि. लंदन, 1976; पुनर्मुद्रण 1995 (*ए कन्साइज़ हिस्ट्री ऑफ इण्डियन आर्ट* के नाम से पूर्व प्रकाशित); *ट्राइबल आर्ट ऑफ मिडिल इण्डिया*, वेरियर एलविन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1951; बांगलार व्रत, अबनीन्द्रनाथ टैगोर, विश्वभारती प्रेस; *मधुबनी पेंटिंग,* उपेन्द्र ठाकुर, अभिनव प्रकाशन; इंडियन प्रिंटेड एण्ड पेंटेड फैब्रिक्स, जॉन इरविन एवं मारग्रेट हॉल एवं अनिल सिन्हा और सुजय मुखर्जी द्वारा प्रस्तुत प्रपत्र।

पुस्तक के निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए तनवीर अहमद, नरेन्द्र कुमार वर्मा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर;* और राधा, ममता गौड़, *कॉपी एडीटर* की भी परिषद् आभारी है।

© NCERT not to be republished

इस पुस्तक के निर्माण हेतु विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ वर्ल्ड वाइड वेब साइट्स से ली गई हैं जिनके हम आभारी हैं।

- http:// tdil.mit.gov.in/apr_2005.htm
- http:// www.cyberkerala.com/kalamezhuthu/index.html
- http:// india.gov.in/knowindia/kalamezhuthu.php
- http:// www.expresstextile.com/20050228/perspectives01.shtml
- Wikipedia, free encyclopedia
- www.bradshawfoundation.com
- http:// www.indianculturеonline.com/details/Pithora-Paintings.html
- "Mandala", Microsoft® Encarta® Online Encyclopedia 2008
- http:// encarta.msn.com © 1997-2008 Microsoft Corporation.

यद्यपि हमने प्रत्येक के प्रति आभार व्यक्त करने का पूरा प्रयत्न किया है, तथापि यदि कोई छूट गया है तो हम इसके लिए क्षमाप्रार्थी हैं क्योंकि यह जानबूझ कर नहीं किया गया है।

© NCERT not to be republished

चित्रों के लिए श्रेय

इकाई I

पृष्ठ 2 और 3–सुनील कुमार; चित्र 1.5– www.luffman.us/bobjones/bobj1.htm; *चित्र 1.7* – फ्लैग्स वेब्स्टर्स इंटरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया; पृष्ठ 12 और 13 – बेगर्स रिसीविंग अल्म्स् इचिंग बाई रैम्ब्रेंट, *ए हिस्ट्री ऑफ ग्राफिक आर्ट, जेम्स क्लीवर,* 1963; *चित्र 2.1* – वेब्स्टर्स इंटरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया; *चित्र 2.2* – www.incredibleindia.in/../2007/12/bhima.jpg; *चित्र 2.3* – लॉस कैपरीचोस एक्वाटिंट बाई गोया, *ए हिस्ट्री ऑफ ग्राफिक आर्ट*, जेम्स क्लीवर, 1963; *चित्र 2.4* – अनिल सिन्हा; *चित्र 2.5*– सुनील कुमार; *चित्र 3.24*– द *स्क्रीम* एडवर्ड मुंक, 1893, नेशनल गैलरी, ओसलो, द ग्रेट आर्टिस्ट, ए मार्शल कैवेन्डिश वीकली कलेक्शन, 74 यू.के.; *चित्र 3.33– लास्ट सपर लिओनार्दो द विन्ची,* 1495–97

इकाई II

चित्र 4.1 – सुनील कुमार; *चित्र 4.5* और *4.10* – *ट्राइबल आर्ट ऑफ मिडिल इण्डिया,* वेरियर एल्विन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1951; *चित्र 4.11, 4.12, 4.13 और 4.14*–सुनील कुमार; *पृष्ठ 52 और 53* – कोलम www.foodlah.com; *चित्र 5.2* – प्रोफ़ेसर नागराज पातुरी; *चित्र 5.5* और *5.6* – सुजय मुखर्जी; *चित्र 5.7, 5.8 और 5.9* www.foodlah.com; *चित्र 5.10* – www.kalamkariart.org/index.php; *चित्र 5.11* www.oac.cdlib.org/fowler/F2E23434BA.jp; *चित्र 5.12 और 5.13* – *ट्राइबल आर्ट ऑफ मिडिल इण्डिया,* वेरियर एल्विन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1951; *चित्र 5.14* – www.ethicpaintings.com/indian_painting_styles/pithorapaintings.html; *चित्र 5.15*– प्रोफ़ेसर नागराज पातुरी; *चित्र 5.16 और 5.17*– ''मण्डाला'' माइक्रोसाफ्ट®, एनकार्टा®, ऑनलाइन इनसाइक्लोपीडिया 2008 और Http://en.wikipedia.org/wiki/Mandalas

इकाई III

चित्र 6.2 - www.ancientweb.org/India/; *चित्र 6.4 से चित्र 6.7* – सुनील कुमार; *चित्र 6.8* – www.hua.umf.maine.edu/MagnaCarta/index.html; *चित्र 6.9* – chinesecalligraphistore.com/catalog/chinese-1; *चित्र 7.1* – सुनील कुमार; *चित्र 7.11* – कैलिको म्युजियम, अहमदाबाद; *चित्र 7.12*- www.estatelegacyvaults.com/elv/cool_nifty_great/; *चित्र 7.13* – अर्लिएस्ट वुड कट, 1423, प्रोसेस ऑफ़ ग्राफिक रिप्रोडक्शन इन प्रिंटिंग, हेराल्ड करवेन, फेबर एण्ड फेबर लि., लंदन, एम.सी.एम.एक्स.एल.आई.एक्स.; *चित्र 7.18* – जार्जटाउन फ्रेम शाप, 2902–1/2 एम स्ट्रीट एन डब्ल्यू वाशिंगटन, डीसी

© NCERT not to be republished

अध्ययन की परिभाषा

कक्षा 11 के लिए 'ग्राफिक डिज़ाइन' विषय की यह पुस्तक डिज़ाइन/रूपांकन के प्रति संवेदनशीलता और दृश्य समझ विकसित करने के लिए तैयार की गई है। 'डिज़ाइन कैसे करें' यह बताना ही इस पुस्तक का उद्देश्य नहीं है बल्कि यह तो क्रियामूलक पद्धति से विषय को सिखाती है। इसे संभव बनाने के लिए कि छात्र सावधानीपूर्वक तैयार की गई अभ्यासमालाओं, प्रायोगिक कार्यों और परियोजनाओं को संपन्न करते हुए अपना संपूर्ण पाठ्यक्रम पूरा करें यह सुझाव दिया गया है कि इसे अध्ययन के दौरान छात्राओं द्वारा तैयार की गई कुछ चुनी गई कृतियों को एक पोर्टफोलियो के रूप में संगृहीत किया जाए। इस प्रकार का कृति संग्रह (पोर्टफोलियो) अध्यापकों को हर समय यह जानने का अवसर देगा कि उनका अमुक छात्र किस प्रकार का सृजनात्मक कार्य कितनी लगन के साथ कर रहा है और उसका विकास किस गति से हो रहा है। इस प्रक्रिया के दौरान, छात्र मौलिक विचार उत्पन्न करने, सृजनात्मक संकल्पनाओं को अंतर्दृष्टि से देखने और उपयुक्त माध्यमों और सामग्रियों का प्रयोग करने के लिए प्रेरित होते हैं।

सोद्देश्य संग्रह पोर्टफोलियो होता है जो पाठ्यचर्या के संपूर्ण क्षेत्रों में छात्र द्वारा उपलब्धियों को दर्शाता है। छात्र को अपना यह पोर्टफोलियो साल भर तैयार करते रहना चाहिए। यह संग्रह कक्षा में और घर में करने के लिए दिए गए कार्यों, परियोजनाओं, प्रलेखनों, क्षेत्रीय दौरों की रिपोर्टों और अन्य सौंपे गए शैक्षिक कार्यों के माध्यम से, शिक्षार्थी के चिंतन तथा सृजनात्मक कौशल में हुए विकास और उसकी अभिवृत्ति तथा मूल्यों में हुए परिवर्तन को दर्शाता है। पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में 'व्यावहारिक गतिविधियाँ' दी गई हैं जो पोर्टफोलियो में शमिल करने के लिए निर्धारित की गई हैं। पोर्टफोलियो शिक्षार्थियों को अपनी सृजनात्मक योग्यता तथा उनके द्वारा किए गए सूक्ष्म अवलोकन एवं निष्पादन की कुशलता के बारे में सोचने के लिए सहायता देता है। यह उन्हें अपने प्रगतिमान कार्यों पर विचार करने और अध्यापक की सहायता से अपने निजी कार्य की गुणवत्ता के बारे में निर्णय लेने में सहायक होता है।

पोर्टफोलियो के कुछ विशिष्ट उद्देश्य

छात्र में ऐसी योग्यता विकसित करना जिससे कि वह :

- ग्राफिक डिज़ाइन की मौलिक कृति की रचना, उसका प्रलेखन और परिरक्षण कर सके;
- इसके बारे में विवेचना कर सके;
- अपनी निजी कृति के विषय में ग्राफिक डिज़ाइन के मूल तत्वों और सिद्धांतों की दृष्टि से निरंतर चिंतन कर सके;
- अपने द्वारा रचित डिज़ाइनों के माध्यम से एक अवधि के संदर्भ में अपनी सर्जनात्मक योग्यताओं का परिवीक्षण और आकलन कर सके;
- ग्राफिक डिज़ाइन की कृतियों की रचना के संबंध में अपनी ताकतों और कमज़ोरियों को पहचान सके।

© NCERT not to be republished

पोर्टफोलियो में क्या रखा जाता है?

पोर्टफोलियो में छात्र की ग्राफिक डिज़ाइन की सर्वोत्तम कृतियों को जिसमें प्रारूप, कच्चे रेखाचित्र, लेख आदि शामिल होते हैं, संगृहीत किया जाता है। ये सब इस बात के साक्ष्य होते हैं कि छात्र अपने कौशल को प्राप्त करने के लिए किस प्रकार प्रगति कर रहा है। इसे छात्र द्वारा ग्राफिक डिज़ाइन के लिए अपेक्षित सृजनात्मक कौशल को प्राप्त करने की दिशा में की गई प्रगति का ब्योरा कहा जा सकता है।

वैसे तो पोर्टफोलियो कई प्रकार के बनाए जाते हैं पर उनमें से अधिकांश पोर्टफोलियो इन दो श्रेणियों में आते हैं : प्रक्रिया या पोर्टफोलियो और उत्पाद पोर्टफोलियो। इनके अलावा भी और कई तरह के पोर्टफोलियो होते हैं लेकिन उनमें अधिक स्पष्ट अंतर नहीं होता।

पहला चरण : पोर्टफोलियो के निर्माण की दिशा में उठाया जाने वाला पहला कदम है एक प्रक्रिया पोर्टफोलियो बनाना, जिसमें संगृहीत प्रलेखों से यह पता चलता है कि छात्र ने एक निश्चित अवधि में, पाठ्यचर्या में स्पष्ट उल्लिखित वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में कितनी प्रगति की है। इन प्रलेखों में कई चीज़ें शमिल होती हैं, जैसे छात्रों को हल करने के लिए दी गई डिज़ाइन संबंधी समस्या का विवरण अथवा छात्रों को दिया गया संक्षिप्त ब्योरा; संदर्भगत विवरण जिससे यह पता चले कि वे डिज़ाइन संबंधी समस्या को किस प्रकार हल करेंगे; मूल्यांकन का मानदंड कसौटी; घसीट कर लिखने या अर्थहीन अंकन जिससे यह पता चले कि छात्र किस दिशा में क्या सोच रहा है; सभी कच्चे नक्शे व रेखा सौंपे गए कार्य, परियोजनाओं, आदि के बारे में छात्र की सीधी सच्ची सोच; कार्य के बारे में अध्यापक की टीका-टिप्पणी; छात्र की कृतियों पर अध्यापक द्वारा किया गया संशोधन या लिखित टिप्पणी।

दूसरा चरण : दूसरा कदम है उत्पाद पोर्टफोलियो विकसित करना जिसे 'सर्वोत्तम कृतियों का पोर्टफोलियो' भी कहा जाता है। इनमें ऐसी परिष्कृत कृतियाँ शमिल होती हैं जिनसे छात्र द्वारा ग्राफिक डिज़ाइन के रूप में प्राप्त कुशलताओं और क्षमताओं का पता चलता है। छात्र अपनी सर्वोत्तम कृतियों का चयन स्वयं करता है अथवा इसके लिए अपने अध्यापकों या अभिभावकों की सहायता लेता है। इस प्रकार 'सर्वोत्तम कृतियों' का चयन भी सीखने की प्रक्रिया का ही एक भाग होता है। सदैव दो तरह की कसौटियाँ होती हैं। पहली श्रेणी की कसौटियाँ वे होती हैं जिनके बारे में (सौंपा गया) काम शुरू करने से पहले ही स्पष्ट रूप से बता दिया जाता है। दूसरी श्रेणी के अंतर्गत ग्राफिक डिज़ाइन के वे सिद्धांत आते हैं जिनका पालन किया जाना चाहिए। इनके बारे में इस पाठ्यपुस्तक में चर्चा की गई है। इन्हें 'चूक कसौटियाँ' कहा जा सकता है क्योंकि इनके पालन में चूक होना अच्छा नहीं माना जाता है। ये कसौटियाँ सभी प्रकार की परियोजनाओं और सौंपे गए कार्यों पर लागू होती हैं। अत: छात्रों को अपनी सर्वोत्तम कृतियों का चयन इन सभी कसौटियों के आधार पर करना चाहिए।

पोर्टफोलियो निर्माण में ये दोनों कदम अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं तथापि, छात्रों को अपने नए तरीके से भी पोर्टफोलियो बनाने की स्वतंत्रता दी जाती है। यदि छात्र किसी नए तरीके के लिए रुझान दर्शाता है अथवा कोई नए किस्म का पोर्टफोलियो बनाने के लिए अपनी इच्छा स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करता है तो उसे उसके लिए अध्यापक द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

पोर्टफोलियो की प्रमुख विशेषताएँ

मौलिकता

पोर्टफोलियो में अंकित और परिरक्षित कृतियाँ और परियोजनाएँ पाठ्यपुस्तक पर आधारित होनी चाहिए, पोर्टफोलियो में रखी गई सभी कृतियों की अध्यापक द्वारा जाँच की जानी चाहिए और उन पर अध्यापक के हस्ताक्षर होने चाहिए।

© NCERT not to be republished

प्रवाह और निरंतरता

पोर्टफोलियो की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उसमें छात्र द्वारा तैयार की गई कृतियाँ पाठ्यचर्या की समस्त अवधि के दौरान समय-समय पर जोड़ी जाती हैं। उसमें छात्र की उच्च कोटि की कृतियों के अलावा साधारण किस्म की ऐसी कृतियाँ भी रखी जाती हैं जिनसे छात्र की प्रगति की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं का पता चलता हो। उनमें से कम-से-कम कुछ कृतियाँ तो ऐसी स्वत: पूर्ण होनी चाहिए जो छात्र के विकास को दर्शा सकें। इससे अध्ययन की प्रक्रिया की अधिक अच्छी जानकारी मिल सकती है।

मूल्यांकन की सुनिश्चित कसौटियाँ

छात्रों को अग्रिम रूप से यह बता दिया जाता है कि करने के लिए सौंपे गए कार्य या परियोजना आदि से क्या अपेक्षा की जाती है जिससे कि छात्र तदनुसार पोर्टफोलियो को व्यवस्थित कर सकें। इसके अलावा, इससे कार्य की गुणवत्ता पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

एकीकरण और उपयोग

पोर्टफोलियो कुछ इस प्रकार का होना चाहिए कि उससे शैक्षिक गतिविधियों और जीवन के बीच अनुरूपता स्थापित हो सके। इस संबंध में छात्रों के साथ-साथ अध्यापकों को भी बड़ी भूमिका निभानी पड़ती है। छात्रों से यह दर्शाने के लिए कहा जाता है कि वे अपनी कृतियों और परियोजनाओं आदि के माध्यम से प्राप्त कौशल और ज्ञान को अपने वास्तविक जीवन की परिस्थिति में किस प्रकार उपयोग करेंगे।

एक सुव्यवस्थित पोर्टफोलियो अध्यापक के हस्तक्षेप की प्रभावकारिता के साथ-साथ छात्र के विकास को भी दर्शाता है। यह एक ऐसा उपयोगी दस्तावेज़ होता है जो परिवार, मित्रों और समुदाय के साथ बैठकर देखा-जाँचा जा सकता है।

पोर्टफोलियों का मूल्यांकन : स्वत: आकलन

छात्र द्वारा पोर्टफोलियो के आकलन का सर्वोत्तम तरीका है स्वत: आकलन यानी स्वयं छात्र द्वारा उसका आकलन या मूल्यांकन। स्वत: आकलन करने से, सृजनात्मक प्रक्रिया में छात्र की ताकतों और कमज़ोरियों तथा संबंधित क्षेत्रों में उसकी प्रगति का आकलन करने के लिए छात्र की क्षमता में सुधार होता है। इस प्रक्रिया से छात्र स्वयं यह जान सकते हैं कि उनके ज्ञान में कितनी वृद्धि हुई है, वे क्या सीख पा रहे हैं और किन-किन क्षेत्रों या विषयों में उन्हें और सुधार करने की आवश्यकता है, आदि-आदि। छात्र यह भी सीखते हैं कि अपनी उपलब्धियों और प्रगति की अधिक सटीक स्थिति जानने के लिए वे अपने अध्यापकों और अभिभावकों के साथ प्रभावी ढंग से कैसे व्यवहार करें। शिक्षार्थी के रूप में अपनी समझ-बूझ के विकास को जानने के लिए पोर्टफोलियो के आकलन का किस प्रकार उपयोग किया जाए यह जानने के लिए छात्रों को अपने अध्यापक के मार्गदर्शन और समर्थन की आवश्यकता होती है। छात्रों को यह भी कहा जाना चाहिए कि वे पोर्टफोलियो के आधार पर स्वत: किए गए अपने आकलन की एक रिपोर्ट तैयार करें। इस स्वत: आकलन की रिपोर्ट का उपयोग आगे चल कर मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा भी किया जा सकता है।

पोर्टफोलियो का आकलन : अध्यापकों/मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा

छात्र के पोर्टफोलियो का आकलन करते समय मूल्यांकनकर्ताओं को स्वयं छात्र द्वारा स्वत: किए गए आकलन पर भी ध्यान देना चाहिए। मूल्यांकनकर्ता छात्र के स्वत: आकलन से सहमत हो सकते हैं या नहीं भी होते; किंतु अंतिम आकलन में इस बात का उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए।

© NCERT not to be republished

पोर्टफोलियो का आकलन एक बहुमुखी प्रक्रिया है जिसमें निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं :

- यह एक निरंतर प्रक्रिया है जिसमें छात्र द्वारा उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में की गई प्रगति पर बराबर नज़र रखने के लिए रचनात्मक और संकल्पनात्मक दोनों प्रकार का अवसर मिलता है।
- यह सहयोगी चिंतन के लिए अवसर प्रदान करता है, जिसके अंतर्गत छात्र अपनी चिंतन प्रक्रिया के बारे में सोच सकते हैं और अंत:निरीक्षण कर सकते हैं, अपने बोध का परिवीक्षण करते हैं, ग्राफिक डिज़ाइन तैयार करने, समस्याओं का समाधान करने और सोच-समझ कर निर्णय लेने की अपनी पद्धतियों पर विचार करते हैं और विषयों तथा कौशलों के बारे में अपनी खुद की समझ-बूझ के बारे में सोचते हैं।
- यह छात्र के सीखने के अनुभव और उसके आधारभूत ज्ञान, कौशल और अभिवृत्तियों पर ध्यान केंद्रित करता है।
- पोर्टफोलियो में छात्र के कार्य के ऐसे नमूने संगृहीत होते हैं जो अध्ययन के अंत में केवल एक बार किए जाने वाले मूल्यांकन की बजाय संपूर्ण मूल्यांकन अथवा अध्ययन अवधि में समय-समय पर किए गए मूल्यांकन से संबंधित होते हैं।
- पोर्टफोलियो में ऐसी कृतियाँ होती हैं जो सौंपे गए भिन्न-भिन्न कार्यों, परियोजनाओं आदि से संबंध में भिन्न-भिन्न प्रकार की आकलन कसौटियाँ प्रस्तुत करती हैं।
- पोर्टफोलियो में तरह-तरह की कृतियाँ होती हैं और स्वयं छात्र, उसके सहपाठियों, अध्यापकों तथा माता-पिता/अभिभावकों द्वारा उनका मूल्यांकन और गुण विवेचन भी सदा संभव होता है।

कृतियों का मूल्यांकन सोच-समझकर किया जाए, इसके लिए यह आवश्यक है कि अध्यापकों के पास अपने छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए बहु-आयामी कसौटियाँ हों। एक पूरी तरह तैयार किए गए पोर्टफोलियो के लिए कुछ कसौटियाँ निम्नलिखित हो सकती हैं :

- विचारशीलता जिससे यह स्पष्ट हो कि छात्र अपने बोध, सोच और समग्र चिंतन-शैली पर ध्यान देता रहा है।
- नवीनता, मौलिकता और विलक्षणता मुख्य मार्गदर्शी कसौटियाँ हैं।
- डिज़ाइन की संचारणीयता, उपयोगिता प्रयोग शक्ति और पुष्टता को कृति में महत्त्व दिया गया है।
- कृति के माध्यम से सौंदर्य, लालित्य और सहजता का भाव स्पष्ट झलकता है।
- कृति में सुस्पष्टता, यथार्थता और उपयुक्तता प्रदर्शित है।
- संबंधों में प्रगति और विकास पाठ्यचर्या संबंधी कौशलों की कुंजी और प्रत्येक सौंपे गए कार्य, परियोजना आदि के विशिष्ट सूचक हैं।
- प्रमुख संकल्पनाओं और कुशलताओं की समझ और उनका उपयोग।
- कार्यों तथा कार्य-विधियों की परिपूर्णतया, परिशुद्धता और उपयुक्तता पोर्टफोलियो में प्रस्तुत है।
- ग्राफिक डिज़ाइन के सिद्धांतों, जैसे कि दृश्य संतुलन, समानुपात, वैषम्य, समरसता, लय, रुचि का केंद्र आदि का प्रयोग और अन्वेषण ठीक से किया गया है जैसा कि इस पाठ्यपुस्तक में बताया गया है।

यह अत्यंत आवश्यक है कि अध्यापक और छात्र एक साथ मिलकर उन कसौटियों की प्राथमिकता निर्धारित करें जिनका उपयोग विभिन्न कार्यों तथा परियोजनाओं के लिए किया जाएगा और जिनके आधार पर छात्र की प्रगति का मूल्यांकन और आकलन रचनात्मक तथा संकल्पनात्मक दोनों रूपों में किया जाएगा। छात्र और

© NCERT not to be republished

अध्यापक एक साथ मिलकर यह पता लगाएँगे कि पाठ्यपुस्तक में दी गई गतिविधियों के अलावा और कौन-सी गतिविधियाँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण या उल्लेखनीय हैं जिन्हें पोर्टफोलियो में स्थान दिया जाना चाहिए। अंततः संकल्पनात्मक मूल्यांकन की प्रक्रिया के अन्तर्गत किसी न किसी रूप में चर्चा या खोज की जाती है।

पाठ्यचर्या की पुस्तक में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पोर्टफोलियो आकलन/मूल्यांकन के लिए 20 अंक अलग से निर्धारित किए जाएँगे। ये निरंतर आकलन के लिए होते हैं और छात्र को सभी इकाइयों के प्रत्येक अध्याय के अंत में दी गई गतिविधियों को संपन्न करना होगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि पोर्टफोलियो के कार्य को गंभीरता से लिया जाए, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.)/पब्लिक स्कूल एक्ज़ामिनेशन बोर्ड ने भी एक बाह्य परिवीक्षण तंत्र की व्यवस्था की है जिसके अंतर्गत परीक्षा बोर्ड द्वारा नामांकित विशेषज्ञों द्वारा जाँच की जाएगी।

अध्ययन की अन्य परिभाषा

पाठ्यपुस्तक में प्रत्येक अध्याय के अंत में दी गई अभ्यासमाला और प्रायोगिकों के अलावा अनेक बॉक्सों में गतिविधियाँ और परियोजनाएँ भी दी गई हैं। बाक्स में सामग्री देने का तात्पर्य है अध्ययन प्रक्रिया को समृद्ध बनाना। यह मूल्यांकन के लिए नहीं होती। गतिविधियाँ, दौरे/योजनाएँ, परियोजनाएँ और प्रायोगिक पोर्टफोलियो के भाग होंगे और उनका मूल्यांकन किया जाएगा।

पुस्तक के अंत में विस्तृत ग्रंथ सूची और ग्राफिक कला व डिज़ाइन के क्षेत्र में प्रयोग की जाने वाली पारिभाषिक शब्दावली भी दी गई हैं। ग्रंथ सूची से ग्राफिक डिज़ाइन विषय की जानकारी बढ़ेगी। कला-संस्थाओं की एक सूची भी पुस्तक में दी गई है। यह सूची उन छात्रों के लिए जानकारी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी जो कला विषय में उच्च अध्ययन करना चाहेंगे।

© NCERT not to be republished

© NCERT
not to be republished